Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 448-452

लिंग व संकाय के आधार पर बी.एड. पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यक्रमों की सार्थकता का अध्ययन

डॉ. सुमन पारीक*

शिक्षा वह व्यवस्था है जो व्यक्ति की अर्न्तनिहित पूर्णता अथवा पारस्परिक संस्कारों का बाह्य रूप से प्रकट करती है वह मनुष्य को अपने समाज में उपयोग, रचनात्मक एवं उत्पादक भूमिका निभाने में सक्षम बनाती है। इन अर्न्तनिहित गुणों को जीवन पर्यन्त जागृत करने की आवश्यकता है।

चूंकि शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए उसकी दार्शनिक विचारधारा का प्रभाव शिक्षा के विभिन्न अंगों पर अवश्य पड़ता है। नवीन क्षितिजों को खोजने, उन्नति एवं विकास के उच्चतर स्तरों को प्राप्त करने के लिए तथा समुदायों और समाजों को तैयार करने हेतु शिक्षकों ने सदैव ही निर्णायक भूमिका का निर्वाह किया है।

शिक्षकों के लिए औपचारिक योग्यताएँ एवं औपचारिक प्रशिक्षण प्राचीनकाल से प्रारंभ हो कर अब तक अस्तित्व में है। शिक्षक निर्माण के लिए प्रशिक्षण कैसे दिया जाये इसके लिए आधार के रूप में शिक्षक–प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम है। बी. एड. पाठ्यक्रम को यदि आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो यह इसमें 1956 से विविधता आई है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यक्रम में विविधता हो क्योंकि हमारे देश में अनेक अर्द्धविकसित एवं पिछड़े हुए प्रदेश है। इन प्रदेशों के विद्यालयों की समस्याएँ भी भिन्न है। फलतः इन शालाओं के लिए विशेष वर्ग के शिक्षक होने चाहिए और शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को इस चुनौती को स्वीकार करके शोध और अन्वेषण के आधार पर नये प्रकार के पाठ्यक्रम की रचना करनी चाहिए। पाठ्यक्रम को बनाते समय कुछ मूलभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए िकवे सुयोग्य अध्यापक तैयार करं। ये शिक्षक अपने विषयों में निष्णात होने चाहिए। उनको अध्यापन की नवीन विधियों से परिचित एवं उनको श्रेष्ठ करने की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में ऐसे शिक्षक उत्पन्न हो जो अपने व्यवसाय में रूचि रखते है। बालकों के विकास में सहायक हो सके। तथा शाला एवं समुदाय के सम्बन्धों को प्रगाढ़ बना सके। व्यवहारिक पक्ष में अभ्यास पाठ को अधिक सघन बनाया जाना चाहिए इसके लिए स्थानाबद्ध कार्यक्रम एवं सहयोगी शाला योजना का प्रयोग किया जाना चाहिए। अध्यापन अभ्यास को अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों का नवीन विधियों से परिचय होना चाहिए।

प्रशिक्षणार्थियों के लिए निर्देशन पाठों का समुचित आयोजन करना चाहिए। दृश्य–श्रव्य सामग्री के उचित उपयोग पर अध्यापन अभ्यास काल में अधिक आग्रह किया जाना चाहिए। इसके लिए सैद्धान्तिक रूप से यह मान लेना चाहिए कि प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्कूल एक प्रयोगशाला है। शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यक्रम को अधिक उपयोगी बनाने के लिए महाविद्यालयों के साथ–साथ निर्देशन और प्रयोगात्मक स्कूल होना चाहिए। इन सब बातों का समावेश पाठयक्रम में होना चाहिए।

* प्राचार्या, राजश्री महिला टी.टी.कॉलेज, शास्त्री नगर, जयपुर, राजस्थान।

भारत व विदेशों में शिक्षक प्रशिक्षण (बी.एड.) के पाठ्यक्रम की सार्थकता की जाँच पर अध्ययन बहुत कम दृष्टिगत होते है जबकि यह वर्तमान की महत्ती आवश्यकता है। वर्तमान वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के युग में शिक्षक के दायित्व एवं कार्य अधिक जटिल बन गये है अतः वर्तमान प्रशिक्षण के दौरान प्रयुक्त विधियों तथा विष्य वस्तु पर शोधकार्य एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस तथ्य को ध्यान रखते हुए शोधकर्मी ने प्रस्तुत समस्या का चुनाव किया है। मुझे आशा ही नही पूरा विश्वास है कि मेरा प्रयास शिक्षा शास्त्रियों, संस्था निर्देशकों, एवं परामर्शदाताओं एवं प्रशिक्षणार्थियों के आन्तरिक पक्षों को छूता हुआ अपने उद्धेश्यों की पूर्ति करते हुये वर्तमान व भावी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग प्रदान करेगा।

शोध के उद्धेश्य

- बी.एड. का प्रशिक्षण विभिन्न संकायो के प्राप्त करने वाले विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति अभिरूचि का पता लगाना।
- बी.एड. के शिक्षकों की पाठ्यक्रम की सार्थकता के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना।
- पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षा से जुड़े शिक्षाविदों के दृष्टिकोण का पता लगाना।
- भावी आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में बी.एड. पाठ्यक्रम की सार्थकता का पता लगाना।
- बी.एड. पाठ्यक्रम का समीक्षात्मक मूल्यांकन करना।

विधि (Method)–प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

प्रतिदर्श– प्रतिदर्श के रूप में राजस्थान में चल रहे राजस्थान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 400 प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है। एवं 40 प्राध्यापकों को चयन किया गया है जो इन प्रशिक्षणार्थियों को अपने शिक्षण से लाभान्वित कर रहे है।

अध्ययन के उपकरण : प्रस्तुत अध्ययन हेतु छात्राध्यापकों एवं शिक्षाविदों के अभिमत को जानने के लिए प्रमापीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण शोध उद्धेश्यो के आधार पर स्वनिर्मित उपकरण निर्माण का निर्णय लिया है।

- प्रशिक्षणर्थियों हेतु अभिरूचि मापनी
- प्रशिक्षको हेतु अभिवृत्ति मापनी
- पाठ्यक्रम निर्माताओं के रूप में शिक्षा संकाय के अधिठाताओं के महाविद्यलयों में प्राचार्यों हेतु खुला साक्षात्कार।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफलता की जाँच के लिए सी. हा. सै. के व हा. सै. के प्रधाना– ध्यापकों के लिए खुला साक्षात्कार।

बी.एड. के विज्ञान संकाय के छात्रों में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–1

विज्ञान संकाय के छात्र	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	100	66.5	5.31	5.07	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	100	29.7	4.25		

0.01 स्तर पर तालिका मूल्य–2.60

तालिका की गणना करने पर 't' का प्राप्त मूल्य 5.07 है यह 't' तालिका मूल्य के 0.05 व 0.01 दोनो ही स्तरों से बहुत अधिक है। अतः नकारात्मक परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य है विज्ञान संकाय के छात्रों में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यक्रमों की रूचि में भिन्नतायें है। बी.एड. की विज्ञान संकाय की छात्राओं में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नही है।

सारणी–2

विज्ञान संकाय के छात्र	N	**मध्यमान** (M)	**मानक विचलन** (S.D.)	**'टी' मूल्य** (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	100	66.29	6.48	5.06	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	100	29.61	4.17		

0.01 स्तर पर तालिका मूल्य–2.60

तालिका की गणना करने पर 't' का प्राप्त मूल्य 5.06 है यह 't' तालिका मूल्य के दोनो ही स्तरों से बहुत अधिक है। अतः नकारत्मक परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य है विज्ञान संकाय की छात्राओं में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यक्रमों की रूचि में भिन्नता है। बी.एड. के प्राध्यापकों में लिंग के आधार पर (स्त्री व पुरूष) पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति अभिवृति के कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी–3 लिंग के आधार पर प्राध्यापकों की अभिवृति

प्राध्यापक	N	**मध्यमान** (M)	**मानक विचलन** (S.D.)	**'टी' मूल्य** (t value)	सार्थकता स्तर
पुरूष प्राध्यापक	15	8.23	4.51	0.17	स्वीकृत
महिला प्राध्यापक	15	8.12	4.63		

गणना करने पर 't' तालिका मूल्य 0.17 है। यह मूल्य ' t' तालिका मूल्य के दोनो ही स्तरों से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि बी.एड. प्राध्यापक चाहे स्त्री हो पुरूष दोनो ही पाठ्यक्रम के प्रायोगिक व सैद्धान्तिक पक्ष के प्रति समान अभिवृति रखते है। लिंग के आधार पर प्राध्यापको की अभिवृति में कोई अन्तर नहीं है। बी.एड. के प्राध्यापकों में संकाय के आधार पर (कला व विज्ञान) पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–4 संकाय के आधार पर प्राध्यापकों की अभिवृति

प्राध्यापक	N	**मध्यमान** (M)	**मानक विचलन** (S.D.)	**'टी' मूल्य** (t value)	सार्थकता स्तर
कला संकाय के प्राध्यापक	15	6.66	1.37	1.59	स्वीकृत
विज्ञान संकाय के प्राध्यापक	15	6.41	1.03		

गणना करने पर 't' तालिका मूल्य 1.59 है। यह मूल्य 't' तालिका मूल्य के दोनो ही स्तरों से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि बी.एड. प्राध्यापक चाहे विज्ञान संकाय के हो या कला संकाय के हो पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति अभिवृति में कोई अन्तर नहीं है। दोनो ही समूह के प्राध्यापकों की अभिवृति लगभग एक जैसी है। शिक्षा में पी. एच. डी. डिग्री धारी प्राध्यापक व एम. एड. डिग्री धारी प्राध्यापकों में बी.एड. पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति अभिवृति में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी–5 योग्यता के आधार पर प्राध्यापकों की अभिवृति

प्राध्यापक	N	**मध्यमान** (M)	**मानक विचलन** (S.D.)	**'टी' मूल्य** (t value)	सार्थकता स्तर
पी.एच.डी.डिग्रीधारी प्राध्यापक	15	8.94	1.66	0.767	स्वीकृत
एम. एड. डिग्रीधारी प्राध्यापक	15	9.12	1.54		

गणना करने पर 't' तालिका मूल्य 0.767 है। जो 't' तालिका मूल्य के दोनो ही स्तरों से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि पी.एच.डी. डिग्रीधारी प्राध्यापक एवं एम.एड. डिग्रीधारी प्राध्यापकों के दोनों की

समूह की अभिवृति में कोई ज्यादा अन्तर नहीं है। दोनो ही समहों के प्राध्यापकों की पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक वा प्रायोगिक पक्ष के प्रति एक जैसी विचारधारा है। बी.एड. के कला संकाय के छात्रों में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–6 लिंग के आधार पर

कला संकाय के छात्र	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	100	66.40	5.57	4.93	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	100	30.49	3.54		

0.01 स्तर पर तालिका मूल्य–2.60

गणना करने पर 't' तालिका मूल्य 4.93 है। यह मूल्य 't' तालिका मूल्य के दोनो ही स्तरों से अधिक है। अतः उपर्युक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कला संकाय के छात्रों में सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य की रूचि में भिन्नताएँ है। बी.एड. के कला संकाय के छात्राओं में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–7 लिंग के आधार पर

कला संकाय के छात्रएँ	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	100	68.05	5.2	5.06	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	100	30.15	3.4		

't' की गणना करने पर यह स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त परिकल्पना भी अस्वीकृत की जाती है। तात्पर्य बी. एड. की कला संकाय की छात्राओं में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक और प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर है। मध्यमान यह स्पष्ट करते है कि उपर्युक्त सारणी के छात्र पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक पक्ष में अधिक रूचि रखते है। बी.एड. के कला संकाय के छात्रों में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–8 संकाय के आधार पर

कला संकाय के छात्र–छात्राएँ	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	200	67.22	5.55	7.12	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	200	30.32	3.66		

गणना करने से प्राप्त मूल्य 7.12 जो 't' तालिका मूल्य के दोनों स्तरों से बहुत अधिक है। इसका तात्पर्य है। कि कला संकाय के प्रशिक्षणार्थियों (छात्र–छात्राएँ) में भी पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यक्रमों की रूचि में भिन्नताएँ है। बी.एड. के विज्ञान संकाय के छात्रों में पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–9 संकाय के आधार पर

विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राएँ	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक पक्ष	200	66.43	5.93	7.19	अस्वीकृत
पाठ्यक्रम का प्रायोगिक पक्ष	200	29.68	4.76		

गणना करने से प्राप्त मूल्य 7.19 जो 't' तालिका मूल्य के दोनों स्तरों से बहुत अधिक है। इसका तात्पर्य है। कि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में भी पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यक्रमों की रूचि में

भिन्नताएँ है। महाविद्यालय के स्वरूप के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों में पाठ्यक्रम के प्रायोगिक पक्ष के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–10

महाविद्यालयों के स्वरूप के आधार पर	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य (t value)	सार्थकता स्तर
महिला महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी	100	18.12	3.80	1.05	स्वीकृत
सह शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी	100	18.68	3.74		

सारणी की गणना करने पर नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि महाविद्यालय के स्वरूप से प्रायोगिक पक्ष की रूचि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दोनों तरह की प्रशिक्षण प्राप्त कर रही प्रशिक्षणार्थियों की रूचि लगभग एक जैसी है।

उपलब्धियों के आधार पर सुझाव

विद्यार्थियों के लिएः

- पाठयोजनाओं को पूरी ईमानदारी से तैयार करे एवं पढ़ाये ताकि वे पाठ्यसामग्री के उद्देश्य को पूरा करें।
- समस्त प्रयोगिक कार्यक्रमों को सूक्ष्म शिक्षण, निरीक्षण कार्यक्रमों, खण्ड शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों को नियमित रहकर पूरा करे।
- विषय वस्तु के सैद्धान्तिक भाग का गहन अध्ययन करना चाहिए।

परिसीमनः

- राजस्थान के बी.एड. (शिक्षण–प्रशिक्षण) के पाठ्यक्रमों में से केवल राजस्थान विश्वविद्यालय के बी.एड. पाठ्यक्रम को ही शोध का आधार बनाया गया।
- प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे केवल 400 प्रशिक्षणार्थियों को ही शोध में सम्मिलित किया गया।
- केवल कला व विज्ञान संकाय के प्रशिक्षणार्थियों को ही न्यादर्श के रूप में लिया गया।
- बी.एड. के निर्धारित पाठ्यक्रम को ही इस शोध का विषय बनाया गया है।
- राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में बी.एड. शिक्षकों को ही सम्मलित किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Abraham Jerry–Guidance and Counselling for Teacher sysup & sons publisher Education Delhi.
- Brunes Jerome's–The process of Education Combridge Mass Harward university press, 1960.
- Buch.mb. –Third Survey of Research of an Education volume-1–Forth Survey of research of an Education volume-1
- Bhatea Kamala– The Principles and methods of teaching, Doaba & Bhatea B.D. House, Delhi.
- Carter V.good–Dictionary of Education, New York
- Chaube S.P.–Survey of Educational problem and Experiments in India Allahabad kitab Modal.
- Bhargava M.–Assential Guidence of writing Research Report H.P. Bhargava Agra.
- Das R.C.–Curriculum and Evaluation N.C.E.R.T. New Delhi, 1984.
- डॉडियाल सच्चिदानन्द,–शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थफाटक अरविन्द अकादमी।
- अस्थाना डॉ विपिन –शिक्षा और मनो विज्ञान में सांख्यिकी
- राय पारसनाथ–अनुसंधान परिचय, द्वितीय संस्करण, आगरा
- शुक्ला रमाशंकर–शिक्षक शिक्षा दशा व दिशा–अक्षत प्रकाशन।
- Grawal Y.P.-Statical method Steating Publishers Pvt. ltd.
- पुरोहित जगदीश नारायण–शिक्षण के लिए आयोजन– राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकादमी –भावी शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- पाण्डेय के. पी.–शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1988

♦❐♦